कथा प्रधान त्रैमासिकी

निकट-31

मूल्य : ₹ 40/-

जनवरी-अप्रैल 2022

संपादक : कृष्ण बिहारी

कथाकार अंक

इस अंक के आकर्षण

- साक्षात्कार : अच्छे रचनाकार जीवन में बहुत कम सुखी होते हैं - राजेन्द्र राव
- संस्मरण : एक खिड़की खुली और दीवाना कर गयी - सुभाष राय
- (विशेष) वयोवृद्ध कवयित्री सरस्वती जोशी (जन्म 1932) के गीत
- साठोत्तरी कहानी की भाव दशा - अजित कुमार राय
- किताबों पर राजेन्द्र राव, असगर वज़ाहत और मनीष वैद्य

क्या कहूँ आज जो नहीं कही - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

निकट

कथा-प्रधान त्रैमासिकी

संयुक्त अरब इमारात से शुरू अब भारत से प्रकाशित

वर्ष-16, अंक - 31, जनवरी-अप्रैल 2022 **मूल्य-₹40**

संस्थापक
अशोक कुमार

सलाहकार
राजेन्द्र राव

संपादक
कृष्ण बिहारी

उप-संपादक
रामनारायण त्रिपाठी, लखनऊ
धनंजय सिंह
राधेश्याम यादव, अबू धाबी

सहयोगी-राजवंत राज, रियाज़ अहमद पारुल तोमर

व्यवस्थापक
अभिनव त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
राजेश तिवारी एडवोकेट
2/241, विजय खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ

आवरण : राजवंत राज
रेखांकन : शशि भूषण बडोनी
मूल्य :
भारत में 40/- रुपये
खाड़ी में 20 दिरहम
यू.के. और अमेरिका में 5 डॉलर
सदस्यता शुल्क
1 वर्ष के लिए = रु 500/-
3 वर्ष के लिए = रु 1500/-

निम्न खाता सं. में
नगर / चेक / डी.डी. जमा करें
बैंक का नाम : बैंक ऑफ बड़ौदा
शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर
खाता सं. Krishna Behari Tripathi
28050100010192
IFSC : BARB0SAPRBS

रचनाएं भेजने का पता
निकट कार्यालय-
HIG-46, B BLOCK, PANKI
KANPUR-208020
Mo. 6307435896
ईमेल: krishnatbihari@yahoo.com

सूचना - आप सभी से विनम्र आग्रह है कि जिनकी सदस्यता शुल्क की अवधि खत्म हो गयी है वे नवीनीकरण अवश्य करा लें।

इस अंक में...

पृष्ठ संख्या

सम्पादकीय - *समय से बात में - समरथ को नहिं दोष गुसाईं* 02

बात-चीत - निकट के संपादक कृष्ण बिहारी की कथाकार राजेन्द्र राव से बातचीत 03

कहानियाँ :

दामोदर मावजो - *कोंपल* 06
(अनुवाद- प्रियंका गुप्ता)
नवनीत मिश्र - *अस्वीकार* 08
राजेन्द्र दानी - कछुए की तरह 14
संतोष दीक्षित - *माँ की दुनिया की कहानियाँ* 22
लता शर्मा - *पड़ोसी* 26
श्याम सुंदर चौधरी - *तासीर* 31
गजेन्द्र रावत - *टोपीबाज* 36
महेश दर्पण - *पड़ाव* 40
प्रज्ञा - *चाल और मात के बीच* 48
सलिल सुधाकर - *सीढ़ी और सांप* 52
पंकज सुबीर - *जाल फेंक रे मछेरे* 60
धनंजय कुमार सिंह - *अंधेरे में सपना* 71
जगमोहन कौर - *यह जगह शरीफ़ खवातीन के लिए नही है* 77
मीना पाठक - *काश* 80
नीरज नीर - *टूटे पंखों वाली चिड़िया* 88
रेणुका अस्थाना - *नन्ही यादें* 92
सुलोचना - *अभाव* 95

लघुकथा : मॉर्टिन जॉन, रणीराम गढ़वाली

संस्मरण : एक खिड़की खुली और दीवाना कर गई -सुभाष राय 99

गीत :

विशेष : सरस्वती जोशी 107

आलेख :

साठोत्तरी कहानी का भाव-लोक - अजित कुमार राय 109

समीक्षा :

अनंत विजय की किताब पर राजेन्द्र राव 114
हरि भटनागर के उपन्यास पर असगर वज़ाहत 115
दृश्य से अदृश्य का सफ़र - मनीष वैद्य 115

अगला अंक गीतकार विनोद श्रीवास्तव पर केंद्रित

स्वामी, सम्पादक कृष्ण बिहारी एच.आई.जी. - 46, पनकी, बी ब्लाक, कानपुर - 208020 से प्रकाशित
मुद्रक अमन प्रकाशन कानपुर- 9415475817, 8419891954

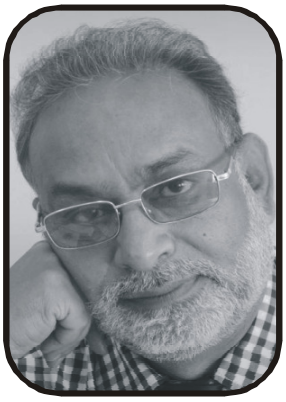

समय से बात

समरथ को नहिं दोष गुसाईं

यूक्रेन...

आज एक महीना हो गया...

युद्ध-विराम जैसी कोई बात अब तक तो नहीं हुई । अफ्रीकन कहावत है - दो हाथियों की लड़ाई में नुकसान घास का होता है। दुनिया में बहुत लोग यूक्रेन के बारे में नहीं जानते थे । मैं भी जानकर भूल चुका था । अधिसंख्य लोग दुनिया के तमाम देशों के बारे में कुछ भी नहीं जानते क्योंकि इसकी कोई खास जरूरत उन्हें नहीं होती । अचानक जब कोई देश सुर्खियों में आता है तो दुनिया को उसका पता चलता है।

26 दिसंबर 1991 में जब सोवियत संघ का विघटन हुआ और 15 देश उससे अलग होकर स्वतंत्र हुए तब गोर्वाचोय की अनथक प्रशंसा हुई थी । अलग होने वाले देशों में यूक्रेन भी था । यह सब उस समय के हिसाब से क्रांतिकारी परिवर्तन माना गया । इन देशों की स्वतन्त्रता के पीछे निशस्त्रीकरण भी एक शर्त थी । एक बात समझनी होगी कि टूटन या स्वतंत्र होने का सुख-दु:ख केवल पल भर का नहीं होता । अलग हुए सभी देश आर्थिक रूप से बहुत कमजोर थे । इन अलग हुए देशों में यूक्रेन जिसकी राजधानी कीव है, सबसे बड़ा है। आज उसी यूक्रेन पर रूसी हमला जारी है । सामरिक दृष्टि से यूक्रेन की स्थिति रूस के लिए सबसे बड़ा खतरा है और उस खतरे का रिमोट अमेरिका के हाथ में है । आज यूक्रेन पर जो हमला हुआ वह अमेरिका और रूस की विस्तार वादी नीति के आगे का वर्चस्ववादी स्वरूप है ।

दुनिया के देशों में अपनी धाकड़ उपस्थिति से वहाँ अपनी छावनी बनाकर हेकड़ी दिखाने की अमेरिकन आदत पुरानी है । वह यूक्रेन में भी अपनी वैसी ही उपस्थिति चाहता था और यूक्रेन की अप्रछन्न इच्छा भी थी जिसे रूस अपने लिए सबसे बड़ा खतरा समझता था । उसने यूक्रेन को आगाह भी किया । एक बार नहीं बल्कि बार-बार मगर यूक्रेन को अपने से अधिक भरोसा अमेरिका और नाटो देशों पर था कि यदि रूस ने किसी ऐडवेंचर की कोशिश की तो उस पर यूक्रेन के मित्र देश और विशेषकर अमेरिका तो टूट ही पड़ेगा । वैसा हुआ नहीं और लोमड़ियों ने मेमने को भेड़िये के आगे डाल दिया । अब जो कुछ पिछले 31 दिनों में हुआ उसने जो अफरातफरी और तबाही मचाई उससे दुनिया में कोहराम मचा हुआ है । यूक्रेन के अनेक शहर बरबाद हुए । लगभग एक करोड़ लोगों ने देश छोड़कर पोलैंड तथा अन्य देशों में शरण ली । स्त्री-पुरुष और बच्चे असहाय हुए । कितने नागरिकों की मृत्यु हुई इसके बारे में सही जानकारी किसी को नहीं है सिवाय इसके कि युद्ध में सर्वोत्तम नष्ट हो जाता है ।

इस युद्ध ने भारत की स्थिति को भी दोबचे में डाला लेकिन गुट निरपेक्ष होने की हमारी भूमिका बहुत हद तक हमारे हक में रही । हमारे नागरिक यूक्रेन में थे । विद्यार्थी थे । अन्य नागरिकों की तरह उन पर भी प्राणों का संकट था । सरकार इन सबको सुरक्षित लाने के प्रयासों में लगी थी । लोकतन्त्र में सत्ता से च्युत हुए लोग सत्ता के कितने भूखे हो जाते हैं, यह सब देखने को मिला । इस तरह का संकट कोई पहली बार नहीं हुआ कि विपक्ष पागलों की तरह विक्षिप्त हुआ । कितने भारतीय वहाँ हैं ? सरकार क्या कर रही है ? सरकार को कोई चिंता नहीं है । सरकार बताए कि वह कब तक सबको निकाल सकेगी ?

इराक, कुवैत, यमन से भारतीय ऐसे माहौल से पहले भी भारत लाये गए हैं । यहाँ तक कि अन्य देशों के भी नागरिकों को इन जगहों से निकाल पाने में भारत सफल रहा है । इस बार भी बारूदी विस्फोटों के बीच से हमारे नागरिक और विद्यार्थी निकाल लिए गए । बांग्लादेशी, पाकिस्तानी तथा कई और देश के विद्यार्थी भी हमारे देश के तिरंगे की छांव में बच सके । यह देश की कूटनीति और उसके शक्तिशाली होने की निशानी है । हिन्दुस्तानी दुनिया को आश्चर्य हुआ है कि हमारे इतने विद्यार्थी वहाँ पढ़ते हैं !

जी, पढ़ते हैं । कहाँ जाएँ ? यूक्रेन में मेडिकल साइंस की शिक्षा 1935 से ही दुनिया में जानी गई है । सस्ती भी है । जब देश में शैक्षणिक संस्थाएं कम होंगी, जब प्रतिभाशाली छात्रों के ऊपर आरक्षण को तरजीह दी जाएगी, जब तक नेता अपने भ्रष्ट प्रभाव का लाभ उठाते रहेंगे, जब तक डोनेशन देने वालों की औकात कूती जाती रहेगी तब तक हमारे बच्चे उन देशों पर उच्च शिक्षा के लिए जाने पर मजबूर रहेंगे जहां प्राणों पर संकट कभी भी आ सकता है । प्रधानमंत्री को भी यह जानकर चकित होना पड़ा । अजीब बात है । प्रधानमंत्री जी शिक्षा के क्षेत्र में जो नरक है उसे अगर दूर नहीं किया गया तो हमारे छोटे और दुधमुंहे बच्चे भी बाहरी मुल्कों में जाने को मजबूर होंगे । जरा पता तो लगवाएँ कि कुकुरमुत्तों की तरह उगे प्राइवेट स्कूलों में फीस कितनी है ? किस-किस नाम पर उगाही नहीं होती ? सरकारी स्कूलों में जमीन पर सूअर लोटते हैं और ढहती इमारत की कभी भी गिर जाने वाली छत पर कबूतरों का बसेरा है । और, शिक्षा का गला तो आरक्षण के भूत ने यहाँ भी घोंट डाला है । समय रहते सरकारें चेत जाएँ तो शायद अगले 20 वर्षों में स्थिति सुधरे ।

मैंने गल्फ वार देखा है । सिर के ऊपर से गुजरते और हाहाकार मचाते लड़ाकू विमानों का तहलका देखा है । दाना-पानी के लिए लोगों को गिद्ध होते देखा है । आपदा में अवसर तलाशने वाले आपसे क्या-क्या नहीं वसूल लेते ? बरबादी देखी है । युद्ध कभी भी सुख-समृद्धि नहीं लाता। बीमारी, भुखमरी, बरबादी, अकाल और बदहवास वातावरण छोड़ जाता है । निर्दोषों की लाशों से जमीन पाटता है युद्ध ! सभी कानों में तेल डाले पड़े हैं । समरथ को नहिं दोष गुसाईं वाली बात है । कोई सुनेगा कि कोई बोले !

अब यूक्रेन को एहसास हो रहा है कि उसने दुनिया को समझने की भूल की । अब रूस को एहसास हो रहा है कि उसने गलत जगह बयाना ले लिया । बहरहाल, बरबादी तो हो ही रही है । यही कामना की जा सकती है कि युद्ध रुके ।

बात-चीत

निकट के संपादक कृष्ण बिहारी की कथाकार राजेन्द्र राव से बातचीत

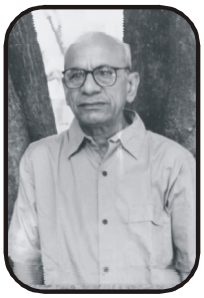

अच्छे रचनाकार जीवन में बहुत कम सुखी होते हैं- राजेन्द्र राव

कथा-साहित्य, कथेतर लेखन पत्रकारिता और संपादन में अपनी विशिष्ट पहचान के लिए विख्यात राजेंद्र राव का अपना आभा मण्डल है। 'निकट' के इस अंक के लिए मुझे उनका साक्षात्कार चाहिए था। मैंने कई साहित्यकारों को यह उत्तरदायित्व देना चाहा मगर हर किसी के पास एक संकोच मिला । मैं चलताऊ और घिसा-पिटा परंपरागत साक्षात्कार नहीं चाहता था । और, तब मुझे लगा कि राजेंद्र राव का साक्षात्कार उसी को करना चाहिए जो उन्हें पूरा न सही मगर कुछ तो जानता हो । मेरे लिए राजेन्द्र राव की स्थिति बड़े भाई की है। किशोरावस्था से ही मुझे भाई साहब का सान्निध्य ही नहीं मिला बल्कि उनके परिवार में भी मुझे एक प्रिय सदस्य की जगह मिली जो आज भी समय के साथ-साथ और सुदृढ़ होती गई।

हिन्दी के जिन बहुत कम रचनाकारों ने स्टारडम जिया है , राजेंद्र राव उनमें से एक हैं । 'निकट' के लिए हमने साक्षात्कार की जगह बात-चीत को महत्त्व दिया और दो कथाकारों ने रचनाकार की स्थितियों पर बात की जिसमें अहो रूपं अहो ध्वनि का मौजूदा माहौल पूरी तरह अनुपस्थित रहा । हमने अपनी या दूसरे की किसी की भी पहली कहानी, चर्चित कहानी आदि की चर्चा तक नहीं की। मुझे यकीन है कि हमारी बात-चीत आपको रास आएगी।

राजेन्द्र राव का पता :
374 A-2, Tiwaripur, Opposite JKRayaon ,Gate No-2 , Jajmaau, Kanpur-208010
Mob: 9935266693

किसी के मन में कब यह भाव पैदा होता है कि मैं भी कुछ लिखूँ ?

– यह अलग-अलग लोगों में अलग-अलग समय और परिस्थितियों में होता होगा। कुछ तो बाल्यावस्था से ही मुखर हो उठते हैं, कुछ थोड़ी परिपक्वता आने की प्रतीक्षा करते हैं । ऐसे भी लेखक हुए हैं जिन्होने प्रौढ़ावस्था में आकर कलम उठाई। एक उदाहरण देना चाहूँगा- एक किशोर वय के शालीन विद्यार्थी को एक सहपाठिनी से प्यार हो गया जो कि दिनों दिन बढ़ता गया, लेकिन वह उसे प्रगट या अप्रगट किसी भी रूप से जताने का साहस नहीं जुटा पा रहा था। उसने प्रेमपत्र लिखने की सोची, बहुत मनोयोग से लिख भी लिया, कई दिन जेब में डाले घूमता भी रहा मगर कन्या को दे नहीं सका। कुछ दिन बाद फिर अंत:प्रेरणा प्रबल हुई तो नए सिरे से नई शैली में लिखा और जेब में रख कर स्कूल गया और लिए-लिए ही लौट आया। उसने दर्जनों प्रेमपत्र लिखे, लिखता ही रहा। सहपाठिनी के पिता का तबादला एक दूर के शहर में हो गया।बहुत बाद में पढ़ाई और करियर सोपान पार करके अचानक एक दिन उसे अपने स्कूली जीवन के उस इकतरफा प्रेम प्रसंग की याद आई और वह अपनी प्रेम-कहानी लिखने बैठ गया। देखा जाए तो उसका लेखन उसी दिन शुरू हो गया था जब उसने पहला प्रेमपत्र लिखा था।

वैचारिक दुविधाएँ रचनाकार के जीवन से कब निकलती हैं?

– विचार जीवन पर्यंत एक अनवरत प्रक्रिया है।और कोई भी विचार अनंत कल तक ज्यों का त्यों नहीं बना नहीं रहता,नए विचार आते रहते हैं और पुरानों को विस्थापित करते हैं।जब तक विस्थापन सम्पन्न न हो जाए दुविधा की मनोदशा बनी रह सकती है।

लेखन यात्रा में क्या स्टेशन भी आते हैं या यह एक अनवरत यात्रा है?

-स्टेशन आते हैं। बड़े स्टेशनों पर गाड़ी अधिक देर तक रुकती है तो छोटों पर बहत कम। कई तो यूं ही छूट जाते हैं। मगर यह सब रेल-पथ संकेतक से